गेहूँ की प्रजातियों के विकास की राष्ट्रीय परियोजनाओं में पंतनगर सम्मिलित

पंतनगर। 5 अक्टूबर, 2009। पंतनगर विश्वविद्यालय को देश में गेहूँ की उच्च गुणवत्तायुक्त एवं रोगरोधी किस्मों के विकास हेतु भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा चलायी जाने वाली दो बहुत महत्वपूर्ण शोध परियोजनाओं में सम्मिलित किया गया है। प्रथम परियोजना “मोबिलाईजिंग क्यू.टी.एल./जीन्स फार क्वालिटी ट्रेट्स इन्टू हाई इल्डिंग ह्वीट वैराइटीज थ्रू मार्कर असिस्टेड सेलेक्सन” की कुल लागत रू. 422.83 लाख तथा द्वितीय परियोजना “मालिक्यूलर मार्कर असिस्टेड डवलपमेन्ट आफ बायोटिक स्ट्रेस रजिस्टेन्ट ह्वीट वैराइटीज” की कुल लागत रू. 490.07 लाख है। प्रथम एवं द्वितीय परियोजना में पंतनगर विश्वविद्यालय को क्रमशः रू. 70.53 लाख तथा 63.95 लाख आवंटित किया गया है। दोनों ही परियोजनायें 5 वर्ष के लिए स्वीकृत की गई हैं। पंतनगर केन्द्र से प्रथम परियोजना के मुख्य अन्वेषक डा. जे.पी. जायसवाल, सह प्राध्यापक एवं गेहूँ प्रजनक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग हैं तथा द्वितीय परियोजना के मुख्य अन्वेषक डा. आर.एस. रावत, प्राध्यापक एवं वरिष्ठ गेहूँ प्रजनक तथा सह मुख्य अन्वेषक डा. जे.पी. जायसवाल हैं।

परियोजनाओं का उद्देश्य जैव प्रौद्योगिकी की ’मालिक्यूलर मार्कर’ तकनीक के माध्यम से उच्च उत्पादन वाली गेहूँ की किस्मों में गुणवत्ता तथा रोग अवरोधिता के जीन का समावेश कर उच्च उत्पादन वाली, रोगरोधी एवं गुणवत्तायुक्त गेहूँ की प्रजातियों का विकास करना है।